भैया भगवतीदास जी कृत

परमात्माछत्तीसी

version : 001
First electronic version : 17 फ़रवरी 2023

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी , वीर निर्वाण सम्वत् 2549
भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ के मोक्ष कल्याणक के शुभ अवसर पर

पण्डित प्रवर श्री भैया भगवती दास जी विरचित "परमात्मा छत्तीसी" जी का यह डिजिटल वर्जन तैयार करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है, इसमें सभी ३६ छंदो को समाहित किया गया है।

यद्यपि इस पीडीएफ को तैयार करने में पूर्णत: सावधानी बरती गई है तथापि हम अज्ञानी व अल्पमति जीव हैं तो टाइपिंग संबंधी त्रुटियां होने की संभावना हो सकती है, उसके लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं।

किसी भी प्रकार की त्रुटि से अवगत कराने के लिए एवं सुझाव के लिए निम्न ईमेल पर अवश्य मेल करके हमें कृतार्थ करें।

infinitejainism@gmail.com

अन्य प्राचीन ग्रंथों/रचनाओं के बेहतर वर्जन को डाउनलोड करने के लिए आप निम्न लिंक पर जाकर डाउनलोड कर सकते हैं। आचार्य प्रवर 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज के ग्रंथों को भी आप यहां से डाउनलोड कर सकते हैं।

Download PDF here or Download PDF here

ॐ

भैया भगवतीदास जी कृत

परमात्माछत्तीसी

(दोहा)

परम देव परमातमा, परम ज्योति जगदीश ॥
परम भाव उर आनके, प्रणमत हों नमि शीश ॥ १ ॥

एक जु चेतन द्रव्य है, तिनमें तीन प्रकार ॥
बहिरातम अन्तर तथा, परमातम पदसार ॥ २ ॥

बहिरातम ताको कहै, लखै न ब्रह्म स्वरूप ॥
मग्न रहै परद्रव्यमें, मिथ्यावंत अनूप ॥ ३ ॥

अंतर आतम जीव सो, सम्यग्दृष्टी होय ॥
चौथै अरु पुनि बारवें, गुणथानक लों सोय ॥ ४ ॥

परमातम पद ब्रह्मको, प्रगट्यो शुद्ध स्वभाय ॥
लोकालोक प्रमान सब, झलकै जिनमें आय ॥ ५ ॥

बहिरातमास्वभाव तज, अंतरातमा होय ॥
परमातम पद भजत है, परमातम ह्वै सोय ॥ ६ ॥

परमातम सो आतमा, और न दूजो कोय ॥
परमातमको ध्यावते, यह परमातम होय ॥ ७ ॥

परमातम यह ब्रह्म है, परम ज्योति जगदीश ॥

पर सों भिन्न निहारिये, जोइ अलख सोइ ईश ॥ ८ ॥

जो परमातम सिद्धमें, सो ही या तन माहिं ॥
मोह मैल दृग लंगि रह्यो, तातैं सूझैं नाहिं ॥ ९ ॥

मोह मैल रागादिको, जा छिन कीजे नाश ॥
ता छिन यह परमातमा, आपहि लहै प्रकाश ॥ १० ॥

आतम सो परमातमा, परमातम सो सिद्ध ॥
बीचकी दुविधा मिटगई, प्रगट भई निज रिद्ध ॥ ११ ॥

मैंहि सिद्ध परमातमा, मैं ही आतमराम ॥
मैं ही ज्ञाता ज्ञेय को, चेतन मेरो नाम ॥ १२ ॥

मै अनंत सुख को धनी, सुखमय मोर स्वभाय ॥
अविनाशी आनंदमय, सो हों त्रिभुवन राय ॥ १३ ॥

शुद्ध हमारो रूप है, शोभित सिद्ध समान ।।
गुण अनंतकर संजुगत चिदानंद भगवान ॥ १४ ॥

जैसो शिव खेतहि बसै, तैसो या तनमाहिं ॥
निश्चय दृष्टि निहारतें, फेर रंच कहुँ नाहिं ॥ १५ ॥

कर्मनके संयोगतें, भये तीन परकार ॥
एक आतमा द्रव्यको, कर्म नचावन हार ॥ १६ ॥

कर्म संघाती आदिके, जोर न कछू बसाय ॥
पाई कला विवेककी, राग द्वेष विन जाय ॥ १७ ॥

कर्मनकी जर राग है, राग जरे जर जाय ॥

प्रगट होत परमातमा, भैया सुगम उपाय ॥ १८॥

काहे को भटकत फिरै, सिद्ध होन के काज ॥
राग द्वेष को त्यागदे, 'भैया' सुगम इलाज ॥ १९ ॥

परमातम पदको धनी, रंक भयो विललाय ॥
राग द्वेषकी प्रीतिसों, जनम अकारथ जाय ॥ २० ॥

राग द्वेष की प्रीति तुम, भूलि करो जिन रंच ॥
परमातम पद ढांकके, तुमहिं किये तिरजंच ॥ २१ ॥

जप तप संयम सब भलो, राग द्वेष जो नाहिं ॥
राग द्वेष के जागते, ये सब सोये जांहिं ॥ २२ ॥

राग द्वेषके नाश तें, परमातम परकाश ॥
राग द्वेष के भासतें, परमातम पद नाश ॥ २३ ॥

जो परमातम पद चहै, तो तू राग निवार ॥
देख सयोगी स्वामि को, अपने हिये विचार ॥ २४ ॥

लाख बात की बात यह, तोकों दई बताय ॥
जो परमातम पद चहै, राग द्वेष तज भाय ॥ २५ ॥

राग द्वेषके त्याग बिन, परमातम पद नाहिं ॥
कोटिकोटि जपतप करो, सबहि अकारथ जाहिं ॥ २६ ॥

दोष आतमा को यहै, राग द्वेष के संग ॥
जैसें पास मजीठके, वस्त्र और ही रंग ॥ २७ ॥

तैसें आतम द्रव्यको, राग-द्वेष के पास ॥

कर्म रंग लागत रहै, कैसें लहै प्रकाश ॥ २८ ॥

इन कर्मनको जीतिबो, कठिन वात है मीत ॥
जड़ खोदै विन नहिं मिटै, दुष्टजाति विपरीत ॥ २९ ॥

लल्लोपत्तो [1] के किये, ये मिटवे के नाहिं ॥
ध्यान अग्नि परकाशकें, होम देहु तिहि माहिं ॥ ३० ॥

ज्यों दारूके गंजको [2], नर नहिं सकै उठाय ॥
तनक आग संयोगतैं, छिन इकमें उड़ि जाय ॥ ३१ ॥

देह सहित परमातमा, यह अचरजकी बात ॥
राग द्वेष के त्यागतैं, कर्म शक्ति जर जात ॥ ३२ ॥

परमातम के भेद द्वय, निकल सकल परमान ॥
सुख अनंत में एकसे, कहिवे को द्वय थान ॥ ३३ ॥

भैया वह परमातमा, सो ही तुममें आहि ॥
अपनी शक्ति सम्हारिके, लखो वेग ही ताहि ॥ ३४ ॥

राग द्वेष को त्याग के, धर परमातम ध्यान ॥
ज्यों पावे सुख संपदा, भैया इम कल्यान ॥ ३५ ॥

संवत विक्रम भूप को, सत्रहसे पंचास ॥
मार्गशीर्ष रचना करी, प्रथम पक्ष दुति जास ॥ ३६ ॥

इति परमात्माछत्तीसी ।

1- टालटूल ; 2- ढेर को

ॐ